33

आत्मा का परिचय देना

आत्मा के लिए अंग्रेज़ी शब्द "Spirit" (*pneuma*) रोमियों 8 में कभी-कभी छोटे "s" परन्तु आम तौर पर बड़े "S" के साथ बीस से अधिक बार मिलता है। बड़े "S" के साथ लिखने पर इस शब्द को पवित्र आत्मा के लिए माना जाता है। रोमियों 8 अध्याय में आत्मा और उसका काम इतना महत्वपूर्ण है कि उसके परिचय का अध्ययन उचित ही है।

कइयों को इस बात की स्पष्ट समझ नहीं है कि पवित्र आत्मा कौन है और वह ज़्या करता है। KJV में इसके लिए "Holy Ghost" शब्द का इस्तेमाल किया गया है (रोमियों 5:5; 9:1; 14:17; 15:13, 16)। "Ghost" पुरानी अंग्रेज़ी का एक शब्द है, जिसका अर्थ "आत्मा" है, परन्तु आज "ghost" या "भूत" का इस्तेमाल करने पर डरावनी, रहस्यमयी आकृतियां मन में आती हैं। कइयों को, हो सकता है कि "Spirit" शब्द में सुधार की समझ न आए ज़्योंकि "आत्मा के हड्डी मांस नहीं होती" (लूका 24:39)। परन्तु याद रखें कि "परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना 4:24)। ज़्या आप परमेश्वर की मानसिक अवधारणा रखते हैं? यदि हां तो पवित्र आत्मा की अवधारणा को बदल दें और आप अपनी समझ में एक बहुत बड़ी छलांग पाएंगे।

एक समस्या यह है कि पवित्र शास्त्र में पवित्र आत्मा को कोई विशेष नाम नहीं दिया गया है। परमेश्वर (पिता) को पुराने नियम में कई नामों से जाना गया है; यीशु (पुत्र) को यीशु, ख्रिस्तुस और *लोगोस* (अन्यों के साथ) कहा गया है; परन्तु पवित्र आत्मा को विशेष विवरण ही दिए गए हैं। यहां तक "पवित्र आत्मा" वाज़्यांश का अर्थ केवल "वह आत्मा जो पवित्र है [*hagios*]" है। उस वाज़्यांश के बारे में कुछ भी विशेष नहीं है ज़्योंकि परमेश्वर की आत्मा है जो पवित्र है, जैसे पृथ्वी पर आने से पहले यीशु था। रोमियों 8 में पवित्र आत्मा को परमेश्वर का आत्मा और मसीह का आत्मा कहा गया है परन्तु फिर यह केवल विवरणात्मक शब्द है। मुझे नहीं मालूम कि पवित्र आत्मा को वह ज़्यों नहीं दिया गया जिसे हम "नाम" कहें। शायद इसलिए ज़्योंकि उसका उद्देश्य अपने आपको प्रकट करना नहीं था। पुराने नियम में उसने पिता को प्रकट किया जबकि नये नियम में उसने खुद को प्रकट किया। एक अर्थ में वह पृष्ठभूमि में ही काम करता है।

आत्मा के बारे में हम *सब कुछ* नहीं जान सकते, परन्तु हम *कुछ बातें* जान सकते हैं और ये वे बातें हैं जो हमें जानने की आवश्यकता है। इस संक्षिप्त अध्ययन में मैं आपको आत्मा की कुछ विशेषताएं बताते हुए उसका परिचय देना चाहता हूं।

वह एक व्यक्तित्व है

आइए पहले यह ज़ोर देते हैं कि पवित्र आत्मा एक *व्यज़्तित्व* (अपने मन में, "व्यज़्तित्व" में "व्यज़्ति" को रेखांकित कर लें)। यूहन्ना 16:13, 14 (केवल दो आयतें) में पवित्र आत्मा की बात नौ बार की गई है जिनमें हर बार व्यज़्तिगत सर्वनाम, पुरुषवाचक और एकवचन में ही है। आत्मा इन गतिविधियों को करने में सक्षम *व्यज़्ति* है, जिन्हें कोई व्यज़्ति कर सकता है:

- शांति (यूहन्ना 14:26; KJV)।
- सिखाना (यूहन्ना 14:26)।
- गवाही देना (यूहन्ना 15:26)।
- सुधारना (यूहन्ना 16:8; KJV)।
- अगुआई देना (यूहन्ना 16:13)।
- रोकना (प्रेरितों 16:6, 7)।
- गवाही देना (रोमियों 8:16; KJV)।
- सिफारिश करना (रोमियों 8:27)।
- ढूंढ़ना (1 कुरिन्थियों 2:10)।
- बोलना (1 तीमुथियुस 4:1)।

किसी ने कहा है, "पवित्र आत्मा को बाइबल में ईश्वरीय 'He' के रूप में दिखाया गया है परन्तु कभी भी महिमा पाए हुए 'It' के रूप में नहीं दिखाया गया। उसे केवल प्रभाव से बढ़कर जीवित, सक्रिय व्यक्ति के रूप में बताया गया है। उसका बहुत प्रभाव *है,* न कि वह केवल प्रभाव है। उसकी बड़ी शक्ति *है,* न कि वह केवल एक शक्ति है। इस पर विचार करें: कई प्रकार से पवित्र आत्मा *आपकी तरह* एक व्यक्ति है। आपको परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया था, जिसमें पवित्र आत्मा के स्वरूप पर बनाया होना भी शामिल है (उत्पत्ति 1:26 में "हम" शब्द को देखें)। आपकी तरह पवित्र आत्मा में निम्न लिखित बातें हैं:

- मन (रोमियों 8:27)।
- ज्ञान (1 कुरिन्थियों 2:11)।
- इच्छा (1 कुरिन्थियों 12:11)।
- भाव, जैसे प्रेम (रोमियों 15:30)।
- भावनाएं। उसे रोका जा सकता है (प्रेरितों 7:51), उससे झूठ बोला सकता है (प्रेरितों 5:3), उसका अपमान किया जा सकता है (इब्रानियों 10:29)! उसकी निंदा हो सकती है (इब्रानियों 12:31)। उसे शोकित किया जा सकता है (इफिसियों 4:30)।

हमारी इच्छा हो सकती है कि काश हमें पता हो कि पवित्र आत्मा "कैसा दिखता" है, परन्तु किसी दूसरे व्यक्ति से परिचित होने की यह सबसे आवश्यक बातें हैं। किसी व्यक्ति के *मन* को जानने से हमें पता चलता है कि वह कैसा न कि उसके *चेहरे* को जानने से।

वह ईश्वरीय व्यक्तित्व है

फिर मैं यह ज़ोर देता हूं कि पवित्र आत्मा ईश्वरीय व्यक्तित्व है। वह पिता और पुत्र की तरह ही है। वह उसका भाग है जिसे KJV "परमेश्वरत्व" कहा गया है (प्रेरितों 17:29; रोमियों 1:20; कुलुस्सियों 2:9)। जो बातें परमेश्वर और यीशु के लिए हैं वही पवित्र आत्मा के लिए हैं। यानी वह जीवन है (देखें याकूब 33:4; यूहन्ना 3:5, 6); वह ज्योति है (या प्रकाश; देखें 1 कुरिन्थियों

2:9-11); वह प्रेम है (देखें रोमियों 5:3-5; 15:30)। आइए उसके कुछ ईश्वरीय गुणों पर ध्यान देते हैं। उसका वर्णन इस प्रकार किया गया है ...

- सनातन (इब्रानियों 9:14)।
- सर्वज्ञ (1 कुरिन्थियों 2:10, 11)।
- सर्वशक्तिमान (शक्ति और पवित्र आत्मा को आम तौर पर जोड़ा जाता है) (मीका 3:8; प्रेरितों 1:8)।
- सर्वव्यापक (भजन संहिता 139:7, 8)।
- भला (नहेज़्याह 9:20)।

पिता और पवित्र आत्मा के साथ, पवित्र आत्मा ने हमें बनाया और आशीष देता है। यह समझने की तरह कि परमेश्वर और यीशु कौन हैं यह समझना कठिन नहीं होना चाहिए कि पवित्र आत्मा कौन है।

वह ईश्वरीय व्यक्तित्व है: "त्रिएकता में से एक"

अन्त में ध्यान दें कि पवित्र आत्मा एक ईश्वरीय व्यक्तित्व अर्थात "*त्रिएकता में से एक* है।" "त्रिएकता" बाइबल का शब्द नहीं है, परन्तु यह बाइबल के विचार को प्रकट करता है। "त्रिएकता" शब्द "त्रि [तीन]" के साथ "एकता" से निकला है। इसका अर्थ है "एक में तीन।"

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीन अलग-अलग व्यक्तित्व हैं (मत्ती 3:16, 17; यूहन्ना 14:16, 17; मत्ती 28:19; देखें रोमियों 15:30; 2 कुरिन्थियों 13:14)।[1] इसके साथ ही "यहोवा एक ही है!" (व्यवस्थाविवरण 6:4; ध्यान दें कि मत्ती 28:19 "नाम" एक वचन में है)। इसका कोई सांसारिक उदाहरण नहीं है, परन्तु यह समझाने के लिए कि कोई चीज़ एक होने के साथ-साथ एक से अधिक कैसे हो सकती है कई उदाहरणों का इस्तेमाल किया जाता है। इस्तेमाल किया जाने वाला एक उदाहरण त्रिभुज है: त्रिभुज की भुजाएं तो तीन होती हैं पर वह एक ही हैं।

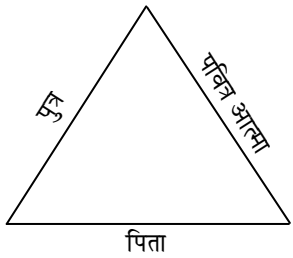

कई बार इस्तेमाल होने वाला एक और उदाहरण शादी का। विवाह में दो लोग एक हो जाते हैं (उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:5, 6; इफिसियों 5:31)। पति और पत्नी दोनों एक हैं, परन्तु वे रहते दो व्यक्ति ही हैं।

परमेश्वरत्व के तीनों सदस्य सार और उद्देश्य में एक हैं परन्तु यह सम्भव है कि प्रत्येक का

कार्य का अपना विशेष दायरा है। एक लेखक ने सुझाव दिया कि पिता तो योजना बनाने वाला है, पुत्र उसे लागू करने वाला और पवित्र आत्मा प्रबन्ध करने वाला। किसी और ने पिता को इंजीनियर, पुत्र को मिस्त्री और आत्मा को पूरा करने वाला कहा। उदाहरण के लिए सांसारिक सृष्टि ने अर्थात पिता ने निश्चय ही इसकी योजना बनाई; परन्तु इब्रानियों 1:2 और यूहन्ना 1:3 सिखाते हैं कि सब कुछ पुत्र के द्वारा बनाया गया था और उत्पत्ति 1:2 से संकेत मिल सकता है कि अस्त-व्यस्तता में से क्रम बनाने का काम आत्मा ने किया (देखें भजन संहिता 104:30)।

"आत्मिक सृष्टि" (राज्य/कलीसिया की स्थापना और सुसमाचार का प्रचार) के लिए परमेश्वर ने योजना बनाई (इफिसियों 3:10, 11) और यीशु ने इस योजना को लागू किया (यूहन्ना 4:34; 5:19; 8:28; 12:49), परन्तु हम कह सकते हैं कि "प्रबन्ध" करने का काम आत्मा ने किया। वह कुंवारी के जन्म "शमौन और हन्ना" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के काम, बपतिस्मे के समय यीशु के परिचय, यीशु को जंगल में ले जाने और प्रभु की अद्‌भुत सेवकाई में यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को उसकी प्रतिज्ञा दी गई थी और राज्य/कलीसिया का आरम्भ करने के लिए पिन्तेकुस्त के दिन वही आया था। फिर उसने सुसमाचार सुनाने के लिए प्रेरितों और सुसमाचार के संदेश को लिखने के लिए नये नियम के लेखकों को प्रेरणा दी थी, ताकि लोग उद्धार पा सकें। जहां तक हमारे उद्धार की बात है, कहा गया है कि परमेश्वर ने इस पर सोचा, यीशु ने तैयार किया और पवित्र आत्मा ने इसे सिखाया।

सारांश

बहुत कुछ है जो पवित्र आत्मा के बारे में हम तब तक नहीं जान पाएंगे, जब तक हम स्वर्ग में उन पवित्र तीनों के सम्मुख नहीं जाते। इसलिए मैं दोहराता हूं कि हम जो कुछ जान सकते हैं, जो कुछ हमें जानना चाहिए। रोमियों 8 हमें प्रेरितों और उसकी गतिविधि के समय के बारे में सीखने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस प्रवचन के बाद लोगों को मसीह के पास आने का निमन्त्रण देने पर आपको चाहिए कि लिख लें कि पिता और पुत्र की तरह ही पवित्र आत्मा को भी आपके सुनने वालों के उद्धार में रुचि है (देखें प्रकाशितवाक्य 22:17)। पापियों से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा लेने के लिए कहें (मत्ती 28:19)।

टिप्पणी

[1]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल रोमियों पर शृंखला के भाग के रूप में करते हैं तो आपको यह ध्यान दिलाना चाहिए कि रोमियों 8 अध्याय परमेश्वरत्व के तीनों सदस्यों की बात करता है (देखें आयतें 9, 11)।